



गीत मेरे होंठों पर-6

“मेरा हाथ मेरे मम्मे, चूत सहला कर मुझे उत्तेजित कर रहा था. मैं बड़ी शिद्दत से केले को मुँह में चूसने लगी. मैंने उसे इतना चूसा कि सच का लंड होता तो पानी छोड़ चुका होता. ...”

Story By: Sandeep Sahu (ssahu9056)

Posted: Tuesday, December 17th, 2019

Categories: [चुदाई की कहानी](#)

Online version: [गीत मेरे होंठों पर-6](#)

गीत मेरे होंठों पर-6

📖 यह कहानी सुनें

आपने मेरी शैदाई बन चुकी गीत की कलम से इस सेक्स कहानी के पिछले भाग में पढ़ रहे थे.

मैंने अन्तर्वासना की साईट खोली हुई थी. मुझे सेक्स कहानियों के अंत में पाठकों के जबरदस्त संदेश दिखे और उनके संदेशों ने मुझे लोवर टी-शर्ट उतार फेंकने पर विवश कर दिया. अभी मैंने केला तो नहीं उठाया था पर मैं अपनी दो उंगलियों में चूत के दाने को मसलते हुए सहलाने लगी थी.

एक कहानी खत्म होने पर मैंने एक दूसरी कहानी को पढ़ना शुरू किया, पहली वाली कहानी देवर भाभी पर आधारित थी, किन्तु अब जिस कहानी को मैं पढ़ रही थी, इसमें अपनी सहेली की चुदाई लाइव देखकर एक लड़की की कामवासना जागृत हो गई थी. फिर उसने सहेली के ब्वाँयफ्रेंड के जरिए उसके दोस्त को पटाकर अपनी कामवासना को शांत किया.

ये कहानी बहुत ही रोचक थी और साथ ही इसे मैंने अपने स्वयं की कहानी समझकर महसूस किया. इस सेक्स कहानी के शब्द जैसे-जैसे आगे बढ़ रहे थे वैसे-वैसे मेरे बदन का तापमान भी बढ़ने लगा था. मैंने पल भर को मोबाइल छोड़ा और पंखे की स्पीड फुल कर दी. साथ ही शरीर पर बचे नाममात्र के कपड़े ब्रा पैंटी को भी उतार फेंका.

मेरे एक हाथ में मोबाइल था, पर एक हाथ को मैंने अपने ही जिस्म को सहलाने के लिए आजाद कर रखा था, साइज क्या था, बाल कितने थे, ये सब मां चुदाए, आप तो बस ये पूछो कि मन कहां था, ध्यान कहां था, बेचैनी कितनी थी, किसे महसूस किया. ऐसे ही

हजारों सवाल अहसासों से जुड़े होते हैं.

मैं कॉलेज के प्रथम वर्ष के अंतिम दिनों में थी, सुडौल बदन और ललचाती जवानी थी. इस पर साइज का महत्व कहां रह जाता है. मैं ये सब इसलिए कह रही हूँ, क्योंकि मैंने भी संदीप को उसके लंड का साइज जाने बिना अपना दिल दे दिया था.

मैं परमीत का लंड चूसना याद करती रही और कहानी के साथ आगे बढ़ती रही. फिर कहानी के नायिका की सहेली की बारी आई और मैंने उसकी जगह खुद को फिट कर लिया. मैं संदीप को महसूस करने लगी.

मेरा एक हाथ मेरे मम्मों पेट जांघ और चूत को सहला-सहला कर मुझे और उत्तेजित कर रहा था. तभी कहानी में भी चुदाई का सब्जेक्ट आ गया और मैंने बिना सोचे ही केला उठा लिया. कहानी के साथ ही मैंने बड़ी शिद्दत से केले को मुँह में लेके चूसा. मैंने इतनी देर उसे चूसा कि अगर सच का लंड होता, तो कब का पानी छोड़ चुका होता.

अब मेरे शरीर में कंपन होने लगी थी. आंखें चौंधियाने लगी थीं. मोबाइल पर कुछ पढ़ना मुश्किल हो रहा था. नायक ने नायिका की चूत में लंड आधा ही प्रवेश कराया था कि मुझे मोबाइल छोड़ना पड़ा. मेरी बंद आंखों में केवल संदीप ही नजर आ रहा था.

मैंने संदीप को महसूस करते हुए केले को चूत के दाने पर रगड़ना शुरू कर दिया और दूसरे हाथ से मैंने अपने फूलते सिकुड़ते शानदार उभारों को मसलने की गति तेज कर दी. मैं अपने निप्पलों को वैसे ही उमेठ और खींच रही थी, जैसा कि संजय परमीत के थन खींच रहा था.

अब मैंने केले के अग्र भाग को चूत में हल्का प्रवेशित करना शुरू किया. मेरे मुँह से कामुक सीत्कार निकलने लगी. मैं आहहह उहहहह करती रही और संदीप का लंड समझ कर उसे

चूत में पूरा समा लेने को तड़प उठी. मेरी नई चूत के लिए मोटा सा लंड एक बार में गटक लेना आसान ना था. हालांकि मेरी चूत ने रस बहा कर खुद को और केले को चिकना कर लिया था, इसलिए काम थोड़ा तो आसान हुआ ही था.

वैसे मैंने पहले भी केले का उपयोग किया था, पर मैं हमेशा छोटा केला ही चुनती थी और चूत के दाने में ही रगड़ कर थोड़ा बहुत ही अन्दर डाल कर काम चला लेती थी. पर आज मैंने संदीप के लंड को महसूस करने की ठान ली थी, इसलिए पहले से थोड़ा बड़ा केला चुना था और उसे अपनी चूत की गहराईयों में पहुंचाने का मेरा फैसला भी अटल था.

अब मैंने अपनी चूत को एक हाथ की दो उंगलियों से फैलाने का प्रयास किया और दूसरे हाथ से केले को पकड़ कर चूत में डालने का प्रयत्न करने लगी. इस अवस्था में मैंने अपनी चूत को निहारना चाहा और आंख खोल कर जब मैंने चूत का दीदार किया, तो अपनी ही चूत पर मंत्रमुग्ध हो गई.

मेरी चूत बहुत गोरी है, हालांकि चेहरे के गोरेपन और चूत के गोरेपन में बहुत फर्क होता है, फिर भी चूत का रंग उजला और साफ था. फांके फैलाते ही गुलाबी पंखुड़ियों पर लिसलिसापन देख गुलाब पर ओस की सुनहरी बूंदों का सहज अहसास मन में तरंगित हुआ. आम दिनों में भी मैंने अपनी चूत को देखा था, पर आज मेरी चूत कामुकता के कारण ज्यादा ही फूली हुई लग रही थी. उसके ऊपर आच्छादित छोटे रेशमी बाल खड़े होने का प्रयास करते हुए थोड़े सचेत प्रतीत हो रहे थे.

मुझे एक पल को खुद की चूत पर नाज हुआ और मैंने खुशी के मारे केला अन्दर धकेल दिया. केला सामान्य भले ही था, पर चूत उसे अचानक ग्रहण करने में नाकाम रही ... और नाकाम होती भी क्यों नहीं, आखिर एक कमसिन बाला की चूत थी. किसी आंटी का भोसड़ा तो था नहीं. इसलिए सामान्य केले ने ही मेरी आंखों में आंसू ला दिए.

मैंने केले को संदीप का लंड जानकर फिर एक बार अपने होंठों को दांतों में दबा कर साहस करते हुए अन्दर धकेलना चाहा, मुझे असहनीय दर्द हुआ, पर मैं घर पर थी, तो ज्यादा जोर से चीख भी नहीं सकती थी. दर्द कम करना भी मेरे ही हाथ में था, तो मैंने केले को चूत में डालना वहीं रोक दिया. अब केला आधे से थोड़ा ज्यादा चूत में घुस चुका था और मैंने उसे वैसे ही रहने दिया.

फिर मैंने मोबाइल उठाया और कहानी पूरा करने लगी. थोड़ी देर में मेरा दर्द कम हो गया था और कहानी में नायक पोजीशन बदल कर चुदाई करने वाला था. जैसे ही मैंने पढ़ा कि नायक ने नायिका की दोनों टांगें अपने कंधे पर रख लीं और लंड को चूत में जड़ तक पेल दिया. तो मेरा भी मन केले रूपी संदीप के लंड को जड़ तक लेने का हुआ, लेकिन मेरी इस असफल कोशिश ने मुझे तड़पा कर रख दिया. मेरे इस प्रयास से केला थोड़ा और अन्दर चला गया.

मैं खुद को इतना दर्द क्यों पहुंचा रही थी, ये मैं खुद समझ नहीं पा रही थी, लेकिन कुछ पलों में ही मुझे मेरा उत्तर मिल गया. मैंने अब केले को और अन्दर नहीं किया, क्योंकि जितना केला चूत के बाहर बच गया था, वो मेरे पकड़ने के काम आ रहा था और अब मैंने केले को अन्दर बाहर करना शुरू कर दिया. एक बार फिर आनन्द से मेरी आंखें चौंधियाने लगीं और मैंने अपनी बंद होती आंखों से कहानी का आखिरी लाईन में यही पढ़ा था कि नायक ने चुदाई के आखिरी धक्के लगा कर चूत में अपना रस बहा दिया.

मुझे आज असीम आनन्द की प्राप्ति हो रही थी और मैंने खुद से कहा कि गीत तुमने इसी असीम आनन्द की अनुभूति के लिए थोड़ा सा दर्द सहा है. मैं अपने सवालों का सही जवाब खुद से ही पाकर संतुष्ट थी.

मैंने अब मोबाइल एक किनारे रख कर केले से चूत की चुदाई तेज कर दी. मैं अपने एक हाथ से कभी अपने कड़क उरोजों को आटे जैसा गूंथती, तो कभी चुदाई कराती चूत के दाने को

सहलाती. मेरी उत्तेजना पल-पल बढ़ती ही जा रही थी. मेरी अपनी ही चुदाई की गति ने अपने ही सारे रिकार्डों को ध्वस्त कर दिया था.

अब वो पल भी आ गया, जब शरीर में अकड़न होने लगी, एक झुरझुरी के साथ ही हाथों की गति मद्धिम होने लगी. होंठों को दांतों ने फिर काट लिया और निप्पल को उंगलियों ने फंसा कर जोरों से खींच लिया.

आनन्द ने अपनी चरम सीमा को पा लिया था. जी हां आपने सही समझा, चूत ने परमानंद का रस बहा दिया था. रस बहने के इस दौर में मैं कुछ पल और चूत को सहलाती रही. अपने पूरे शरीर पर हाथ फिराती रही. मानों मैं अपने हर अंग को शाबाशी देना चाह रही हूँ.

मैंने केले को अपनी आंखों के सामने लाया, वो थोड़ा मुलायम सा हो गया था, वो अधपका केला था, नहीं तो अब तक तो कब का पिचक चुका होता. मैंने उसे भी उसकी बहादुरी का इनाम देते हुए एक चुम्मा लिया और उसी समय केले पर मैंने रक्तिम लाली देखी. खून के कुछ कतरे स्पष्ट थे, तो कुछ मेरे कामरस के साथ मिल चुके थे. उसे देख कर मेरे चेहरे पर एक मुस्कान आ गई, क्योंकि मैंने जो दर्द महसूस किया था, उसमें इतना खूनखराबा तो होना ही था. मैं इसके लिए तैयार भी थी और इससे परिचित भी थी.

परिचित इसलिए ... क्योंकि जब पहली बार मैंने अपनी चूत में उंगलियां घुसेड़ी थीं, तब भी मैंने उंगलियों पर खून के हल्के थक्के पाए थे, जो बहुत कम थे. पर मेरी पहली सीख के लिए काफी थे. अब इन बातों से ध्यान हटाकर मैंने केले को बिस्तर के नीचे बड़े सम्मान से एक कपड़े से ढक कर रख दिया, क्योंकि सुबह उसे सबकी नजरों से बचा कर फेंकना भी था.

मैं कुछ देर ख्वाबों में खोई हुई ऐसे ही नंगे बदन लेटी रही. फिर जब नींद आने लगी, तो मैंने खुद को साफ करते कपड़े पहन कर सोना ठीक समझा और वैसा ही किया. मुझे बहुत

अच्छी नींद आई और साथ ही सुहाने सपने भी आए.

सुबह उठकर मैं घर पर सामान्य थी और कल की पार्टी के कारण आज हम लोगों ने कॉलेज जाना भी कैंसल कर दिया था. मैंने घर पर रहकर पढ़ाई के अलावा काम में मम्मी का हाथ बंटया, रात की हरकत की वजह से चूत में दिन भर मीठा दर्द होता रहा और मन में जवानी की लहरें अब हर वक्त हिलोर मारने लगी थीं.

कल जो कुछ हुआ था, वो मेरे और मनु के लिए सिर्फ एक सबक ही था, लेकिन परमीत के लिए जैसे एक घटना थी. ये बात मन में आते ही मैं उदास हो जाती. दिन का समय, तो जैसे तैसे कट गया, लेकिन शाम को परमीत से मिलने की व्याकुलता होने लगी. मैंने मनु के घर अपने मोबाइल से फोन किया और परमीत के घर जाने की बात कही, तो मनु ने हां कह दिया. मैं दस मिनट में मनु के घर चली गई.

अरे हां मैंने तो ये बात बताई ही नहीं थी कि मोबाइल सिर्फ मेरे पास था, परमीत अपनी मम्मी का मोबाइल चला लेती थी और मनु पापा के मोबाइल या घर के फोन से काम चलाती थी. पापा ने मुझे बारहवीं अच्छे नम्बरों से पास होने पर मोबाइल गिफ्ट किया था, जिस पर भैया ने खूब फटकार लगाई थी. फिर मैंने मोबाइल से किसी से बात नहीं करने का वादा किया था, जिस पर मुझे मनु और परमीत से बात करने की छूट मिली थी. इसलिए मेरा मोबाइल ज्यादा काम का नहीं था.

ये बात मैं विस्तार से इसलिए बता रही हूँ क्योंकि अगर हम सबके पास पर्सनल नम्बर होते, तो ऐसी बातों को भी फोन पर ही खुल कर बतिया लेते और मन शांत हो जाता.

खैर उस समय हमें जितनी सुविधाएं मिल रही थीं, वही बहुत थीं. आज के बच्चे तो थोड़ी सी कमी पर हाय-तौबा मचा देते हैं.

मैं और मनु परमीत के यहां उदास चेहरे लेकर पहुंचे, शायद उनके घर वाले आज भी नहीं आए थे, क्योंकि बाहर उनकी गाड़ी नहीं थी. मैंने डोरबेल बजाई और उसकी बड़ी दीदी ने दरवाजा खोला. दीदी हम लोगों को जानती थी, हमें देखते ही दीदी ने परमीत को आवाज लगाई- परमीत ... मनु और गीत आए हैं.

अन्दर से ही परमीत की रोने जैसी आवाज आई- उन्हें अन्दर ही भेज दो.

हम दोनों परमीत के पास और उदासी के साथ गए. हमें लगा कि वो बेचारी अब तक सदमे में है. पर वहां पहुंच कर देखा कि वो अभी सो कर अंगड़ाई लेते हुए उठ रही है और इसीलिए उसकी आवाज कुछ मरी सी आ रही थी.

फिर परमीत ने बिस्तर से ही बहुत खुशी से हमारा स्वागत किया और परमीत को खुश देख कर हमारे दिल को भी सुकून मिला.

परमीत ने हमें अपने बिस्तर पर ही बैठने को कहा. चूंकि वो अभी सो कर उठी थी, इसलिए बाथरूम चली गई. जब वो बाथरूम की तरफ जा रही थी, तब मैंने नोटिस किया कि उसकी चाल थोड़ी लड़खड़ा रही थी. पर मन में ही मैंने जवाब ढूंढा कि पैरों में झुनझुनी भरी होगी या नींद के कारण ऐसा होगा.

अब मैं उसके आने का इंतजार करने लगी. मनु परमीत की दीदी के पास चली गई. मनु इस घर में मेरे से ज्यादा आती थी, तो उसका परिचय ज्यादा था. इधर परमीत बाथरूम से निकली और उधर मनु और दीदी चाय बिस्किट के साथ कमरे में आ गए.

दीदी ने ट्रे रखते हुए कहा कि घर के सभी बाहर गए हुए हैं ... दो दिन और नहीं आएंगे, तो मैं बाजार से कुछ सामान लेकर आ जाती हूँ, तब तक तुम लोग बातें करो.

हमने हां में सर हिला दिया, दीदी के जाने के बाद मनु ने दरवाजा बंद किया और हम फिर से

परमीत के बिस्तर पर आकर बैठ गए.

मैंने चाय में बिस्किट डुबाते हुए परमीत से कहा- मैं तो सोच रही थी कि कल कि बात से तू बहुत दुखी होगी, पर यहां तो माजरा कुछ और ही है.

इस पर परमीत ने जोर का ठहाका लगाया और कहा- तुम दोनों मुझे ये बताओ कि कोई इंसान जिस काम से बहुत आनंदित हो, वो भला उस काम के लिए दुखी क्यों होगा. परमीत बिंदास लड़की थी, पर उसका इतना खुलापन हमारी समझ में नहीं आ रहा था.

मनु ने थोड़ा चिढ़ कर कहा- अगर तुझे कल इतना ही मजा आया था, तो उदासी और फंसने जैसा नाटक हमारे लिए ही था क्या ?

इस पर परमीत ने मनु की जांघों पर हाथ रखते हुए कहा- तू नाराज क्यों होती है मेरी जान, कल सच में ही मैं बहुत उदास थी, पर घर आने के बाद मैंने रोते हुए दीदी को सारी बातें बता दी थीं. फिर दीदी ने मुझे चुप कराया और समझाया. तब मेरी उदासी ही खुशी में बदल गई.

अब मनु से पहले मैं बोल पड़ी- ऐसा क्या समझा दिया दीदी ने, जरा हमें भी तो बता ! परमीत ने कहा- दीदी बाजार से आती ही होंगी, फिर तुम लोग उन्हीं से पूछ लेना. तुम लोग जल्दी चाय बिस्किट खत्म करो, फिर तुम्हें मैं एक राज की बात बताती हूँ.

हमने एक बार परमीत को देखा और उसकी बात झट से मान ली. मनु ने तो ट्रे भी किचन तक पहुंचा दिया.

फिर मैंने कहा- बोल कुतिया क्या राज है ?

उसने अपने बिस्तर के नीचे हाथ डाला और एक अजीब सी चीज निकाली. गुलाबी रंगत लिये वो ट्रांसपेरेंट चीज जानी पहचानी सी लग रही थी. शायद हम जान ही चुके थे, पर

खुद की आंखों पर ही भरोसा नहीं कर पा रहे थे.

मनु ने अचरज करते हुए कहा- ये क्या चीज है ? क्या यही तेरा राज है ?

परमीत हंसते हुए हमसे बोली- कमीनियों बनो मत, क्या तुमने कभी लंड नहीं देखा है ? ये नकली लंड है, जिसे डिल्डो कहते हैं. तुम दोनों भी इसे जानती हो, फिर भी नौटंकी कर रही हो.

वो अधूरा सच कह रही थी, हमने डिल्डो के बारे में थोड़ा बहुत तो सुन रखा था, पर आंखों के सामने लंड जैसी आकृति का खिलौना पहली बार आया था.

‘चल अब ज्यादा भाव मत खा ... इसके बारे में पूरा बता, तुझे ये कैसे मिला, तूने इससे क्या किया, सब कुछ जल्दी बक दे. एक तो साली तेरा ये खिलौना देख कर पेंटी गीली हो गई, ऊपर से तू पहेलियां बुझाने में लगी है.’

मनु के शब्दों से मालूम हुआ कि उसकी चुत गीली है. उसके जैसी ही हालत मेरी भी थी. मैंने परमीत के हाथों से उसे लेना चाहा, तो परमीत ने हाथ हटा कर मुझे और तड़पा दिया.

फिर मैंने थोड़ा नाराज होने का नाटक किया, तो उसने डिल्डो मुझे देते हुए कहा- ले देख ले गीत डार्लिंग, पर सीधे चूत में मत डाल लेना.

उसकी इस बात पर मैंने भी बेशर्मी से कहा- तू तो ऐसे कह रही है ... जैसे कि मेरी चूत में इतना बड़ा एक फुट का डिल्डो चला ही जाएगा.

परमीत ने इठला कर कहा- मेरी चूत में तो चला गया था.

अब मैं और मनु आश्चर्य से परमीत को देखने लगे.

ssahu9056@gmail.com

जवानी की कहानी जारी रहेगी.

Other stories you may be interested in

गीत मेरे होंठों पर-2

अंजू ने बिंदास जवाब दिया- यार, आराम से तो पति भी चोदता है, थोड़ा रगड़ के अंदर तक चुदाई हो, और थ्री सम या ग्रुप भी हो जाये तो मजा आ जायेगा। मैं चाहती हूँ कि मर्द मुझे बड़े-बड़े लंडों [...]

[Full Story >>>](#)

ड्राइविंग सिखाकर बहन की चुदाई

दोस्तो, क्या हाल चाल है आपका ? मैं शिवाली प्रोवर हूँ. मैं लुधियाना से हूँ. मेरी पिछली कहानी थी मॉडलिंग की लालच में मेरी बहन चुद गई मुझे मेरे किसी दोस्त ने ई-मेल से एक कहानी भेजी है. मुझे यह कहानी [...]

[Full Story >>>](#)

मूली गाजर ले लो, खीरा ले लो

दोस्तो, वैसे तो आप मेरी कहानी का शीर्षक पढ़ कर ही समझ गए होंगे कि मेरी कहानी एक सब्जी वाले के साथ हुई चुदाई की है. मगर ये सब्जी वाला कोई ऐसा वैसा सब्जी वाला नहीं है ; ये हैं गोविन्द [...]

[Full Story >>>](#)

बहू के साथ शारीरिक सम्बन्ध-6

मेरे इशारे को समझते हुए वो मेरी बांहों की कैद में आ गयी और अपने दोनों पैरों को फैलाते हुए बैठने लगी. “अहं अहं ... अभी मत बैठो, ऐसे ही खड़ी रहो !” कहते हुए मैंने उसके तौलिये के अन्दर हाथ [...]

[Full Story >>>](#)

बहू के साथ शारीरिक सम्बन्ध-5

थोड़ी देर तक बहू ऐसे ही करती रही और फिर एक बार सीधी बैठी और इस बार अपनी साड़ी को अपने से अलग किया तो मुझे उसका मैचिंग पेटीकोट नजर आया। सायरा अब और नीचे मेरी जांघ की तरफ आ [...]

[Full Story >>>](#)

